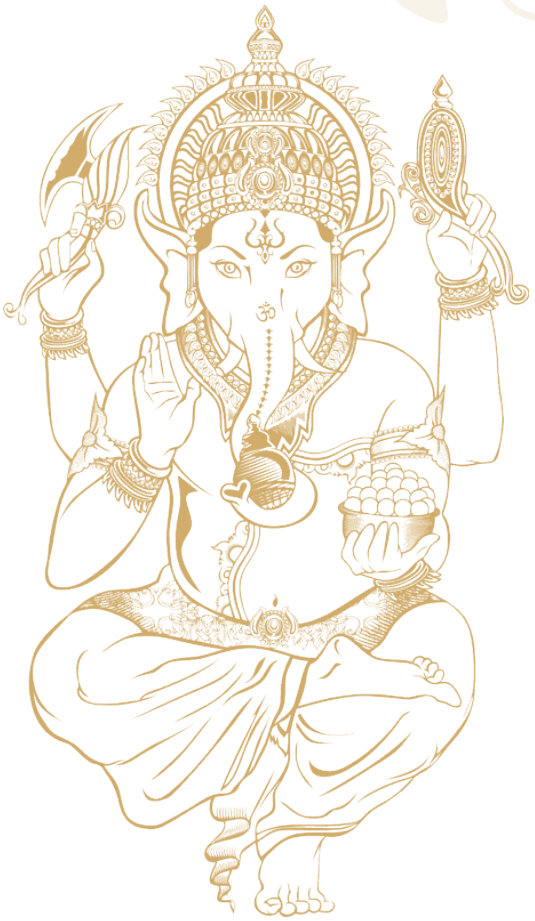

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121131701

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121131701 Date: 01/02/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
27/09/1997	जन्म तिथि	13/10/2001
शनिवार	दिन	शनिवार
घंटे 23:30:00	जन्म समय	10:30:00 घंटे
घटी 43:10:02	जन्म समय(घटी)	10:14:11 घटी
India	देश	India
Bilaspur	स्थान	Bilaspur
31:18:00 उत्तर	अक्षांश	31:18:00 उत्तर
76:48:00 पूर्व	रेखांश	76:48:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:22:48	स्थानिक संस्कार	-00:22:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:13:59	सूर्योदय	06:24:19
18:13:11	सूर्यास्त	17:53:26
23:49:28	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:37

मिथुन	लग्न	वृश्चिक
बुध	लग्न लग्नाधिपति	मंगल
कर्क	राशि	सिंह
चन्द्र	राशि-स्वामी	सूर्य
आश्लेषा	नक्षत्र	मघा
बुध	नक्षत्र स्वामी	केतु
4	चरण	2
सिद्ध	योग	शुभ
कौलव	करण	बालव
डो-डोभाल	जन्म नामाक्षर	मी-मीनाक्षी
तुला	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला
विप्र	वर्ण	क्षत्रिय
जलचर	वश्य	वनचर
मार्जार	योनि	मूषक
राक्षस	गण	राक्षस
अन्त्य	नाड़ी	अन्त्य
श्वान	वर्ग	मूषक

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 2वर्ष 5मा 20दि		13:57:31	मिथु	लग्न	वृश्चि	17:02:40	केतु 3वर्ष 9मा 8दि	
शुक्र		10:50:03	कन्या	सूर्य	कन्या	26:02:58	सूर्य	
20/03/2007		28:03:35	कर्क	चंद्र	सिंह	06:08:39	23/07/2025	
20/03/2027		05:21:06	वृश्चि	मंगल	धनु	26:25:31	23/07/2031	
शुक्र	19/07/2010	28:11:12	सिंह	बुध व	कन्या	27:56:50	सूर्य	09/11/2025
सूर्य	20/07/2011	18:26:58	मक व	गुरु	मिथु	21:08:08	चन्द्र	11/05/2026
चन्द्र	19/03/2013	24:12:22	तुला	शुक्र	कन्या	03:17:58	मंगल	16/09/2026
मंगल	19/05/2014	24:03:08	मीन व	शनि व	वृष	20:51:16	राहु	10/08/2027
राहु	19/05/2017	25:55:43	सिंह	राहु व	मिथु	06:06:37	गुरु	28/05/2028
गुरु	18/01/2020	25:55:43	कुंभ	केतु व	धनु	06:06:37	शनि	10/05/2029
शनि	20/03/2023	11:01:39	मक व	हर्ष व	मक	27:09:47	बुध	17/03/2030
बुध	18/01/2026	03:23:29	मक व	नेप व	मक	12:07:19	केतु	23/07/2030
केतु	20/03/2027	09:33:58	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	19:20:44	शुक्र	23/07/2031

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:49:28 चित्रपक्षीय अयनांश 23:52:37

लग्न-चलित

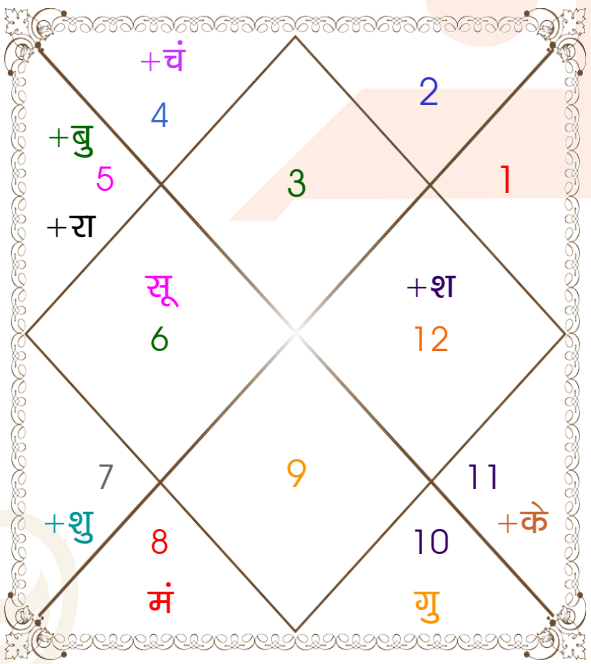

लग्न-चलित

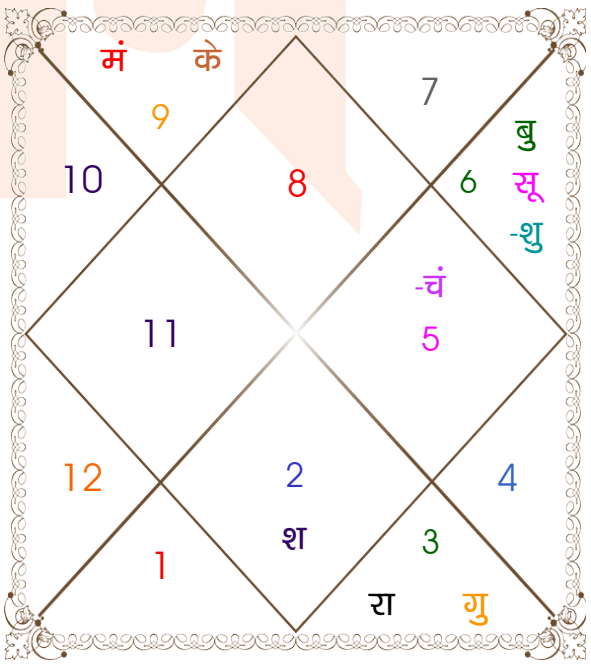

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	वनचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मार्जार	मूषक	4	0.00	--	यौन विचार
मैत्री	चन्द्र	सूर्य	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	कर्क	सिंह	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	16.00		

कुल : **16 / 36**

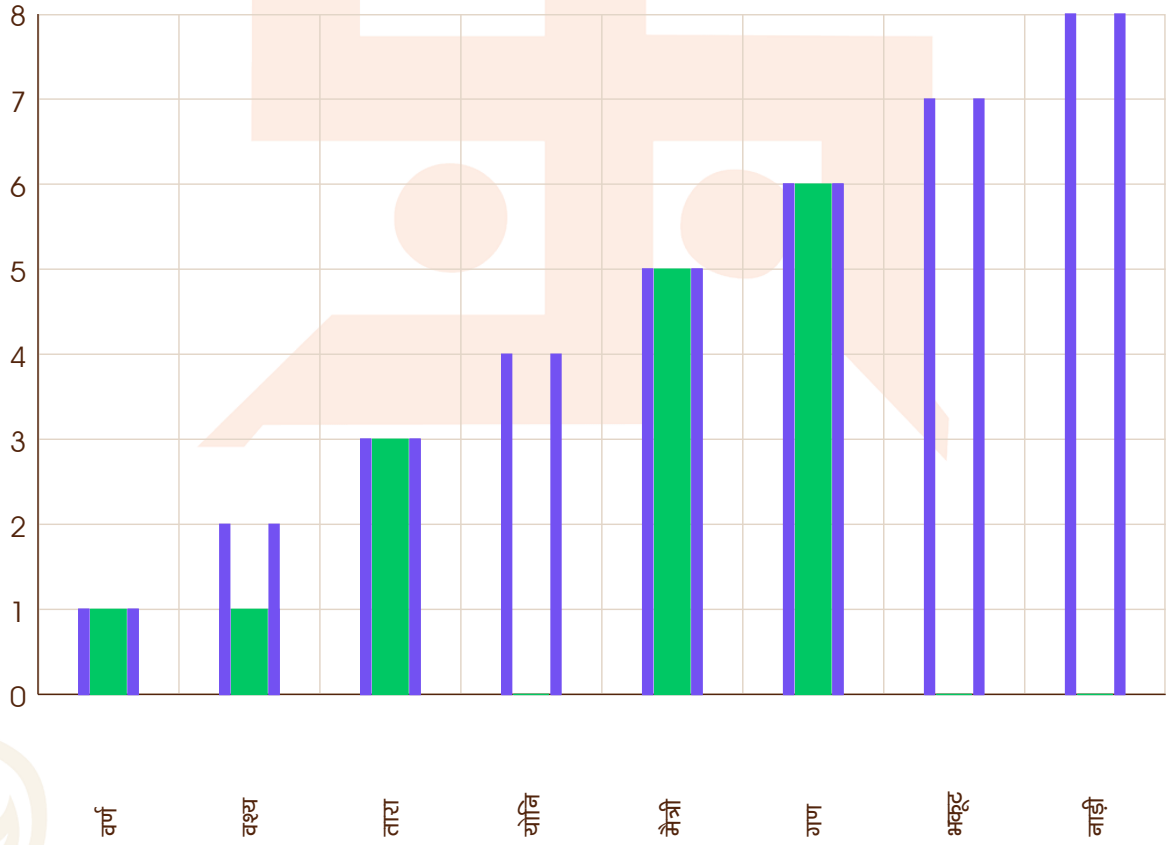

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनोa के राशि स्वामियोa मेa मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनोa के नक्षत्र एवa राशियाa भिन्न-2 है।

a का वर्ग श्वान है तथा a का वर्ग मूषक है। इन दोनोa वर्गोa मेa परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार a और a का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

a मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली मेa षष्ठ भाव मेa स्थित है।

a मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली मेa द्वितीय भाव मेa स्थित है।

a तथा a मेa मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

a का वर्ण ब्राह्मण तथा a का वर्ण क्षत्रिय है। अतः यह मिलान अति उत्तम है। जिसके प्रभाव से a मेa अपने पति के प्रति अगाध प्रेम, श्रद्धा एवa सम्मान की भावना रहेगी। कभी-कभी क्षत्रिय खून की गर्मी भी समय-समय पर उबाल मारने के कारण समय-समय पर a आक्रामक व्यवहार कर सकती हैa हालांकि उनका व्यवहार कभी भी अनियंत्रित नहीa होगा। a सदैव अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन भली-भांति करती रहेंगी तथा वे सदैव प्रशंसा की पात्र रहेंगी।

वश्य

a का वश्य जलचर है एवa a का वश्य वनचर है। जिसके कारण यह मिलान औसत मिलान है। जलचर एवa वनचर दो भिन्न वश्य हैa किंतु दोनोa एक-दूसरे को नुकसान नहीa पहुंचायेंगे हालांकि उनके स्वभाव, गुण, खान-पान एवa व्यवहार एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न होंगे। जलचर a एवa वनचर a का विवाह होने से दोनोa के विचारों, पसंद/नापसंद मेa भिन्नता होने के बावजूद दोनोa आपस मेa समझौता कर एवa सामंजस्य स्थापित कर खुशी पूर्वक जीवन व्यतीत करते रहेंगे।

तारा

a की तारा अतिमित्र तथा a की तारा सम्पत है। अतः दोनोa की तारा अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह विवाह वैवाहिक जीवन एवa परिवार के लिए चहुंमुखी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। साथ ही दोनोa एक-दूसरे के लिए काफी भाग्यशाली साबित होंगे। a हमेशा a के साथ मित्रवत व्यवहार करता रहेगा तथा उसे असीम प्रेम एवa प्यार देता रहेगा। इनके बच्चे भी काफी बुद्धिमान, भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवa सफल होंगे।

योनि

a की योनि मार्जार है तथा a की योनि मूषक है । अर्थात दोनोa की योनि समान नहीa है। इन दोनोa योनि के बीच परस्पर शत्रुता का संबंध है। अतः यह मिलान बहुत बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनोa के बीच अक्सर घरेलू हिंसा होती रहेगी। समय-समय पर एक दूसरे पर आघात भी कर सकते हैं। दोनोa के बीच प्रेम एवa सौहार्द का अभाव बना रहेगा। दोनोa के बीच परस्पर संदेह की भावना बनी रहगी। वैवाहिक जीवन मेa स्थिति मुकदमेबाजी तक भी जी सकती है। दोनोa के बीच अलगाव की चाह भी हो सकती है। एक घर मेa रहकर स्थिति तलाक जैसी बनी रह सकती है। परस्पर अविश्वास की भावना के कारण वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है। अतः अपने वैवाहिक जीवन को बचाये रखने के लिए दोनोa को परस्पर विश्वास व सहयोग की आवश्यकता है अन्यथा घरेलू हिंसा होने के कारण चोट भी लग सकती है। वैचारिक मतभेदोa को बुद्धि बल तथा समझदारी से निपटाना चाहिये अन्यथा लड़ाई झगड़े से किसी भी समस्या का हल निकाल पाना असंभव है।

मैत्री

अष्टकूट मिलान मेa ग्रह मैत्री कूट मेa a एवa a दोनोa के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि a एवa a के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण a एवa a जीवन की हर खुशी एवa सुख प्राप्त करने मेa सफल होंगे तथा इनमेa परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवa सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओa एवa वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

a का गण राक्षस है तथा a का गण भी राक्षस है। अर्थात a का गण a के गण के समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण a एवa a दोनोa के स्वभाव, विचार तथा पसंद-नापसंद एक जैसे होंगे। यद्यपि कि दोनोa के स्वभाव क्रूर, निष्ठुर एवa असंवेदनशील होंगे किंतु फिर भी एक-दूसरे के लिए ये अति अनुकूल एवa आदर्श साबित होंगे।

भकूट

a से a की राशि द्वितीय भाव मेa स्थित है तथा a से a की राशि द्वादश भाव मेa स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा नहीa है। जिसके कारण a गुस्सैल एवa लड़ाकू स्वभाव के हो सकते हैं। साथ ही शारीरिक रूप से कमजोर तथा अपव्ययी होंगे। a समझौतावादी, सौम्य एवa दयालु प्रवृत्ति की होंगी तथा अपने कर्त्तव्योa एवa उत्तरदायित्वोa को आसानी से बखूबी निभाती रहेंगी तथा बचत भी करती रहेगी। दूसरी ओर a शाहखर्च, लापरवाह एवa अय्याशी मेa पैसे बर्बाद करने वाले हो सकते हैं।

नाड़ी

a की नाड़ी अन्त्य है तथा a की नाड़ी भी अन्त्य है। अर्थात दोनोa की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीa है। a एवa a की एक ही नाड़ी अन्त्य होने के कारण शरीर मेa श्लेष्मा की अत्यधिक वृद्धि होने की संभावना है। जोकि भावी दम्पत्ति के लिए खतरे की सूचक हैं। जिसके प्रभाववश संतान की मृत्यु भी संभव है। आपको श्वांस की तकलीफ, दमा जैसी बीमारियाa तथा कमजोर स्वास्थ्य का सामना करना पड़ सकता है। आपकी संतान मानसिक रोग, सुस्त विकास एवa निम्न बौद्धिक स्तर की शिकार हो सकती हैं।

मेलापक फलित

स्वभाव

a की जन्मराशि जलतत्व युक्त कर्क तथा a की राशि अग्नितत्व युक्त सिंह है। नैसर्गिक रूप से अग्नि एवa जल का परस्पर शत्रु एवa विषमता का भाव होता है। अतः a और a के मध्य स्वभावगत असमानताएa विद्यमान रहेंगी जिससे उनका दाम्पत्य जीवन विशेष अच्छा नहीं रहेगा।

a की राशि का स्वामी चन्द्रमा तथा a की राशि का स्वामी सूर्य परस्पर मित्र राशियोa मेa स्थित हैं। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी। इसके प्रभाव से मतभेदोa एवa असमानताओa को दूर करने मेa a और a को सफलता प्राप्त होगी। साथ ही मित्रता के भाव से एक दूसरे के गुणोa की प्रशंसा करेंगे तथा कमियोa की उपेक्षा करेंगे। इससे परस्पर प्यार सहानुभूति एवa सहयोग का भाव बना रहेगा एवa प्रसन्नता पूर्वक जीवन को व्यतीत करने मेa समर्थ रहेंगे।

a और a की राशियाa परस्पर द्वितीयद्वादश भाव मेa पड़ती है। यह एक प्रबल भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से a और a के स्तर पर अत्यधिक विषमता का भाव दृष्टिगोचर होगा जिससे परस्पर मतभेद एवa विवाद होंगे तथा यदा कदा क्रोध आदि के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। अतः यदि a और a सामंजस्य पूर्वक रहेa तथा उग्रता के भाव का परित्याग कर सकेa तो संबधोंa मेa मधुरता का भाव हो सकता है।

a का वश्य जलचर तथा a का वश्य वनचर है। इन दोनोa की परस्पर मित्रता होने के कारण a और a की अभिरूचियोa मेa समानता होगी तथा शारीरिक मानसिक एवa भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकताएa समान रहेंगी। फलतः काम संबधोंa मेa एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने मेa समर्थ होंगे जिससे जीवन की प्रसन्नता बनी रहेगी।

a का वर्ण ब्राह्मण तथा a का वर्ण क्षत्रिय है। अतः कार्य क्षेत्र मेa भी इनकी क्षमताओa मेa समानता रहेगी। a शैक्षिणक तथा धार्मिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे तथा a की प्रवृति उत्साही पराक्रमी तथा साहसिक कार्यो के प्रति रहेगी फलतः कार्य क्षेत्र मेa उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

धन

a की तारा सम्पत तथा a की तारा अतिमित्र है। इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति मेa सुदृढ़ता तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। a धनवान एवa भाग्यवान होंगी तथा a के सौभाग्य से a की आर्थिक स्थिति नित्य उन्नति की ओर अग्रसर रहेगी। a और a दोनोa की राशियाa परस्पर द्वितीय एवa द्वादश भाव मेa स्थित है जो भकूट दोष माना जाता है। लेकिन मंगल का आर्थिक क्षेत्र पर प्रभाव सम रहेगा। अतः सामान्यतया a और a समृद्ध एवa सुख संसाधनोa से युक्त रहेंगे।

भकूट दोष के प्रभाव से a की प्रवृति अत्यधिक व्ययशील होगी तथा भौतिक साधनोa मेa

वह काफी व्यय करेंगी लेकिन उनकी सुदृढ़ आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा समस्त सुखोa का उपभोग करते हुए इनका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

स्वास्थ्य

a तथा a दोनोa की ही अन्त्य नाड़ी है। अतः दोनोa नाड़ी दोष से पीड़ित रहेंगे इसके प्रभाव से इनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर शारीरिक अस्वस्थता के कारण सांसारिक महत्व के कार्यो को करने मेa परेशानी की अनुभूति होगी। इससे a को गले से संबधित कोई परेशानी हो सकती है तथा कफ या वात संबंधी कष्ट का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन मंगल का इन पर कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा। अतः रोग की गंभीरता से बचाव रहेगा लेकिन समय समय पर न्यूनाधिक कष्ट की इन्हेa अनुभूति होती रहेगी। इसके अतिरिक्त a को यदा कदा यौन संबंी गुप्त रोगोa का भी सामना करना पड़ सकता है। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन की दृष्टि से यह मिलान अच्छा नहीं रहेगा जिससे इसकी यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से a और a का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हेa उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमेa अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चोa के जन्म मेa भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने मेa आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त a और a के पुत्र एवa कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय मेa a के मन मेa पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन a को इस विषय मेa किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल मेa a को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवa आकर्षक बच्चोa को जन्म देने मेa सफल होंगी। साथ ही स्वयa भी स्वस्थ एवa प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से a और a सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र मेa अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमेa विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार a और a का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

a के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनोa के मामलोa मेa कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत a के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनोa के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

a अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवa सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवa सन्तुष्ट करने मेa सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवa देवरोa के साथ भी उनके संबध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवa स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने मेa सफल रहेंगी।

इस प्रकार a के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर मेa उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

a के अपनी सास से संबधोa मेa मधुरता रहेगी तथा सास को वह अपनी माता के समान पूर्ण आदर एवa सम्मान प्रदान करेंगे। वह उन्हेa अपने पुत्र के समान समझेंगी तथा उसी प्रकार अपनत्व तथा वात्सल्य प्रदान करेंगी। साथ ही समय समय पर वे सपत्नीक सास से मिलने के लिए ससुराल जाते रहेंगे।

लेकिन ससुर के साथ मेa a के संबध अच्छे नहीं रहेंगे। इनकी आयु मेa अधिक अंतर के कारण वैचारिक तथा सैद्धांतिक मतभेद समय समय पर उत्पन्न होते रहेंगे। लेकिन यदि दोनोa सामंजस्य की प्रवृति से कार्य लेa तो मतभेदोa मेa न्यूनता आएगी तथा मधुर संबधोa मेa वृद्धि होगी। साथ ही साले एवa सालियोa से भी संबधोa मेa तनाव रहेगा तथा मानसिक स्तर पर विभिन्नता रहेगी जिससे एक दूसरे को वांछित सहयोग स्नेह एवa सहानुभूति अल्प ही प्रदान करेंगे। अतः इनको परस्पर सामंजस्य के भाव की स्थापना करनी चाहिए। इस प्रकार ससुराल पक्ष का दृष्टिकोण a के प्रति सामान्य ही रहेगा।